ISSN No. : 2394-0344 Remarking : Vol-2* Issue-1*June-2015

हिन्दी लघुकथा का महत्व

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा, मध्यप्रदेश

सारांश

हिन्दी साहित्य के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना गद्य है, गद्य साहित्य में हिन्दी कहानी को जो लोकप्रियता प्राप्त हुई वह किसी अन्य विधा को नहीं। कहानी एक स्वतंत्र विधा के रूप में अस्तित्व में आई तो वह अंग्रेजी के शार्ट स्टोरी के समानान्तर उभरी और छोटी कहानी के नाम से प्रचलित हुई। आगे चलकर छोटी कहानी को लम्बी कहानी का नाम दिया गया, और पुनः हिन्दी कहानी का नया रूप सामने आया, जो कहानी और लम्बी कहानी से अलग थी। जिसे लघुकथा के रूप में ख्याति मिली। इस प्रकार कहानी के तीन प्रमुख मोड़ है, कहानी, लम्बी कहानी, लघुकथा, जिसका अलग–अलग अस्तित्व है। लघुकथा के बीज वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जातक कथाओं में प्राप्त होते हैं। पर वैचारिक धरातल पर आज की लघुकथाओं और प्राचीन लघुकथाओं में अन्तर है। इस विशाल ब्रम्हाण्ड में लघुपृथ्वी की हैसियत नगण्य है, फिर भी उसकी उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता, ठीक यही बात लघुकथा के लिये भी उचित प्रतीत होती है। यह कहते हुये मुझे हर्ष हो रहा है कि अनेक लघुकथाएँ समसामयिकता से जुड़ी हुई प्रभाव सम्प्रेषण की दृष्टि से असीम क्षमतायुक्त है। निश्चित ही कुछ लेखक यथार्थ क धरातल और समय की आवाज को मुखर करने की ईमानदारी से कोशिश में लगे हैं। अतः हिन्दी लघुकथाओं ने देश में अपना स्थान तो बनाया ही है, पर अब विश्वस्तर में भी इसे सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है।

मुख्य शब्द : लघुकथा, गद्य, कहानी, सृजनधर्मी।

प्रस्तावना

लघुकथाओं में जहॉ सूक्तियों का समीकरण है, जीवन की विद्रुपताओं और विषमताओं का समाहार है, वहीं व्यंग्य की पैनी धार, कथा का श्रृंगार और संवादों के माध्यम से नाटकीयता है। यायावर मन के बीच घटने वाली क्षणिक घटनाओं में जीवन की विराट व्याख्या छिपी रहती है। इस विराट कथ्य को बिम्बों में बांध लेना ही लघुकथा सर्जक का उपक्रम है। संक्षिप्तता इसकी पहचान है। मन को आन्दोलित करने वाली अनुभूति को डाइल्यूट किये बिना कहना लघुकथा की विशेषता है। यही कारण है कि जिस तल्लखी, तीखेपन, सटीकता, और चुभन की प्रखरता से आर्थिक विषमता, सामाजिक विसंगतियाँ, राजनैतिक और प्रशासनिक भ्रष्टाचार व्यक्ति और समाज की विडम्बना, मानवीय सम्बन्धों का खोखलापन संघर्ष और शोषण को जितने अच्छे से लघुकथा के माध्यम से उजागर किया जा सकता है, उतना साहित्य के किसी अन्य विधा से नहीं। वर्तमान समय में लघुकथा का महत्व बढ़ता जा रहा है, देखा जाय तो संस्कृत मे लघुकथाओं की पर्याप्त रचना हुई है, हिन्दी में कुछ समय से इस पर ध्यान दिया जाने लगा है। प्रेमचन्द्र, प्रसाद से जैनेन्द्र, अज्ञेय तक इस धारा की एक शक्तिशाली गति हैं। प्रेमचन्द्र ने नशा, मनोवृत्ति, जादू, दो सखियाँ, अनेक लघुकथाएँ लिखी, प्रसाद जी ने भी कुछ लघकथाएँ लिखीं जिनमें कलावती की विजय, गुदड़ी के लाल, अघोरी का मोह आदि हैं।[1]

आज हम जो लघुकथाओं का नया रूप देख रहे है, वह बटवृक्ष तैयार करने में जिस प्रख्यात साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से शब्दों को गढ़ा है, उनमे प्रमुख है– आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र, दिनकर, राधाकृष्ण, कन्हैयालाल मिश्र, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव, डॉ0 राजकुमार शर्मा, डॉ0 ऋचा शर्मा, सरोज शर्मा, हरिशंकर परसाई, शरद कुमार मिश्र, आदि लोगों ने हिन्दी लघुकथा को विशिष्ट पहचान दी। प्रख्यात साहित्यकार व पत्रकार डॉ0 राजकुमार शर्मा जी लघुकथा को निरन्तर आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। उनके द्वारा लघुकथा पत्रिका का प्रकाशन भी किया गया था, जिसके सम्पादन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। पर हिन्दी साहित्य जगत में एक ऐसा नाम जिन्होंने लघुकथा को पुनरूज्जीवन देने का महान काय किया, आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र का साहित्य जगत सदैव ऋणी रहेगा। मिश्र जी हिन्दी लघुकथा व ऐतिहासिक लघुकथा के जनक माने जाते हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से 1919 में

'अग्निमित्र की प्रेम परीक्षा' व्यंग्यात्मक लघुकथा लिखी, इसके पश्चात महात्मा गांधी को लक्ष्य लेकर 'बूढ़ा व्यापारी' लघुकथा लिखकर एक नवीन चमत्कारिक प्रयोग किया, धूपदीप, मौत की खोज, और जय पराजय, आदि पर लेखनी चलाई। धूपदीप साहित्यिक महत्व और उत्कट भाव रत्नों से परिपूरित है। ''मौत की खोज मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापन पर आधारित लघुकथा संग्रह है, और जय पराजय ऐतिहासिक कहानियों और लघुकथाओं से युक्त है।[2] मिट्टी के आदमी अनूठी सामाजिक व्यंग्यात्मक लघुकथाओं का संग्रह है, जिसे उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत किया गया है। मिश्र जी की पंचतत्व, जिसमें भावात्मक, सामाजिक, ऐतिहासिक, लघुकथाएँ, लघुलोककथाएँ तथा लघुबोध कथाएँ संग्रहित है। पंचतत्व को भी उत्तर प्रदेश शासन ने पुरस्कृत किया है। मिश्र जी की कहानियों की विशेषता है। मानव जीवन के मौलिक तत्वों का उत्कर्ष प्रस्तुत करना, जो अन्य कहानीकारों में उपलब्ध नहीं हो पाता। मिश्र जी की अनेकों लघुकथाएँ है, पर मौत की खोज, धन का विभाजन, 'अव्यर्थ–स्तुति' तीनों ही बहुमूल्य हैं। मिश्र जी की कुछ लघुकथाएँ जो मील का पत्थर हैं–भक्तों को भगवान का फल, मेवाड़ का अनुशासन, न फूटने वाली मशक, बलिदान के भूखे भारतीय, भारत की वीर मृत्युजंय अबलायें, मुसलमान कुरान, मरकर स्वाधीन, देश की अमानत, राजा विक्रमादित्य, भगवान का उपकार, नेतृत्व, कालिदास का वाक चातुर्य, मोह–विजय, पाप का दंड, बल का अंहकार, ज्ञानोदय, आदि अनेक लघुकथाओं ने हिन्दी साहित्य जगत में अपना एक महत्वपूर्ण विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। आचार्य मिश्र जी की प्रेरणा से हिन्दी लघुकथा को एक नया आयाम नई दृष्टि मिली, जो वर्तमान समय के लेखकों के लिये वरदान सावित हुई है। आज हिन्दी साहित्य जगत में लघुकथाओं की मांग बढ़ रही है। यह सभी विधाओं से आगे नजर आ रही है। अनेक रचनाकार विभिन्न प्रकार की लघुकथाएँ लिखने का प्रयास कर रहे है। जिनमें से कुछ प्रशंसनीय है। पर कुछ कमियाँ अभी भी है, कुछ चर्चित पत्रिकाओं में प्रकाशित लघुकथाएँ वागर्थ पत्रिका मार्च 2001 में चन्द्रपाल सिंह की जानवर, फजलूर रहमान हाशमी का अंगूर, सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव का प्यासी हिरनी, चैतन्य त्रिवेदी का अपना ही दुश्मन, अन्तरा करवड़े का कन्या, श्याम मनोहर व्यास का ग्लानि, आलोक कुमार का अवसर, योगेन्द्रनाथ शुक्ल जी का आत्मग्लानि, संतोष खरे का रेल मंत्री का आदेश। आदि अनेकों लघुकथाएँ अपना विशिष्ट स्थान रखती है। मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्यामसुन्दर व्यास जी को वीणा पत्रिका में प्रकाशित लघुकथाएँ जिनमें प्रमुख हैं– कौर और कौपीन, समय का गणित, संस्कार, सफाई का मूल्य, मजबूरी, आंसू का इतिहास, दाग अपना, अपना दर्शन, साहित्यिक मिठास, आदि लघु कथाओं पर लेखक ने अपनी लेखनी चलाई। ज्ञानोदय पत्रिका में प्रकाशित लघुकथा सी. भास्कर राव की बस स्टाप पर लाश, सुशान्त सुप्रिय की बदबू, चैतन्य त्रिवेदी की गला और बाजार, गायत्री आदि की हरे रिबन वाली लड़की, अपनी मुक्ति, आज के पंच परमेश्वर आदि अनेक लघुकथाओं ने ख्याति अर्जित की।[3]

निष्कर्ष यह है कि लघुकथा आज के व्यस्ततम युग की मांग के अनुसार सृजनधर्मी मानस और विविध विसंगत संदर्भो की टकराहट के बीच से उपजी एक समर्थ विधा है, जो देखने में छोटी होते हुये भी रूप की प्रभावक्ता में कहानी से कम नहीं है। लघुकथा की लोकप्रियता धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है, परन्तु लघुकथा क विषय में उसकी विषयगत एकरूपता पर प्रश्न चिन्ह उठाये जाते है कि लघु कथाकार का प्रमुख उद्देश्य आस–पास की प्रमुख विकृतियों जर्जर झोपड़ियों में सिसकती बेबसी नैतिक मूल्यों का ताण्डव करती हुई राजनीति उज्जवल भविष्य की आशा में बोझिल वर्तमान ढोता हुआ आम आदमी, स्त्री पुरूष सम्बन्धी युगीन यथार्थ के वो कुछ पहलू है, जो शताधिक लेखकों की लघुकथाओं के विषय हैं, पर अब लघुकथाकारों को इस दायरे को तोड़कर बाहर आना होगा। अधिकांश लघुकथाओं में शहरी जिन्दगी की झांकी प्रस्तत की गई है। आंचलिक लघु कथाए कम है, ग्राम्य जीवन पर लघुकथाकारों ने कम लिखा है। अतः वर्तमान लेखकों को इस पर ध्यान देना चाहिये, जिससे इसकी लोकप्रियता में और भी अधिक वृद्धि हो। पर यह निश्चित है कि आज भी अनेकों श्रेष्ठ लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं पर लघुकथाओं की बाढ़ में वे खा जाती हैं। इन सबको दृष्टिगत रखते हुये यह कहा जा सकता है कि हिन्दी लघुकथा का भविष्य उज्जवल है, क्योंकि यह पाठकों के बीच अपनी लोकप्रियता को कायम रखे हुये हैं। यह कहते हुये मुझे हर्ष हो रहा है कि अनेक लघुकथाएँ समसामयिकता से जुड़ी हुई प्रभाव सम्प्रेषण की दृष्टि से असीम क्षमतायुक्त है। निश्चित ही कुछ लेखक यथार्थ के धरातल और समय की आवाज को मुखर करने की ईमानदारी से कोशिश में लगे हैं। अतः हिन्दी लघुकथाओं ने देश में अपना स्थान तो बनाया ही है, पर अब विश्वस्तर में भी इसे सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है।[4]

संदर्भ सूची

1. साहित्य अमृत, साहित्य एवं संस्कृति की संवाहक, फरवरी 2010 आसफ अली रोड नई दिल्ली। पृष्ठ– 42
2. अक्षर शिल्पी, सुजनात्मक अभिव्यक्ति की प्रमुख पत्रिका, महाराणा प्रताप नगर भोपाल म.प्रं. सितंबर पृष्ठ 32
3. वाक पत्रिका, 2009, अंक 05, दरियागंज नई दिल्ली। पृष्ठ 32
4. स्वयं का सर्वेक्षण एवं निष्कर्ष।